A National, Registered & Refereed Monthly Journal : Military Science
Research Link - 172, Vol - XVII (5), July - 2018, Page No. 19-21
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782
Since March 2002

भारत की जीवन रेखा : हिन्द महासागर

समुद्र के किनारे स्थित राष्ट्रों के लिए यह कथन निर्विवाद सत्य है कि समुद्र पर अधिकार करने वाला देश आंशिक रूप से स्थल पर भी अधिकार करने में समर्थ होता है। ऐसे राष्ट्रों में भारतवर्ष भी एक राष्ट्र है जिसकी सीमाएं तीन ओर से हिन्दमहासागर से घिरी हुई हैं। भारत की जलीय समुद्री सीमा लगभग 6100 किमी. लम्बी है। इस समुद्री सीमा का विस्तार पूरब में मलाया तथा सुमात्रा तक, पश्चिम में अदन और फारस की खाड़ी मेडागास्कर तथा केप आफ गुड होप तक है। व्यापारिक दृष्टिकोण से भारत एक ऐसा केन्द्र है जहां पर विश्व के प्रमुख समुद्री मार्ग आकर मिलते हैं। इस प्रकार अंतरराष्ट्रीय व्यापार की दृष्टि से भारत की स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो पूर्वी एवं पश्चिमी राष्ट्रों को रूचिकर क्षेत्र बनाते हैं। प्रथम आवश्यकता है। यह सभी संभव है जब भारत एक शक्तिशाली समुद्रीय शक्ति की स्थापना करेगा। पस्तुत शोध-पत्र में हिन्दमहासागर से संबंधित भारत की सामुद्रिक सुरक्षा एवं नौसैनिक शक्ति के प्रबोध हेतु उसकी आवश्यकताओं की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।

डॉ.राघवेन्द्र कुमार पाण्डेय* एवं धर्मेन्द्र कुमार पाण्डेय**

दक्षिण एशिया को सुख, समृद्धि एवं प्रगति का मार्ग प्रस्तुत करने वाला हिन्द महासागर भारत की जीवन रेखा है। हमारे पूर्वजों ने पुराणकाल में समुद्र मंथन कर सिद्ध किया था कि हिन्द महासागर रत्नों की खान है। इसलिए ही पुराणों में इसको रत्नाकर के नाम से भी पुकारा गया है। यह महासागर सदियों से भारत की सुरक्षा प्रगति एवं अस्तित्व से जुड़ा हुआ है जिसके कारण ही शायद विश्व समुदाय ने प्रचान काल से ही एकमात्र इस महासागर को भारत के एक अन्य नाम हिन्दुस्तान या हिन्द से जोड़ रखा है। भारत के परिप्रेक्ष्य में हिन्द महासागर का विशेष महत्व है, क्योंकि वह तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है। जिसके उत्तर में दक्षिण एशिया एवं दक्षिण पूर्व एशिया के देश तथा दक्षिण में अठलांटिक पूर्व में आस्ट्रेलया तथा पश्चिम में अफ्रीका महाद्वीप है।

हिन्द महासागर लगभग 763 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। जिसमें उत्तर से दक्षिण इसकी लम्बाई 10400 किलोमीटर तथा पूर्व में पश्चिम इसकी चौड़ाई 9600 किमी. है। इस क्षेत्र में विश्व के जलमंडल का लगभग 19 प्रतिशत भाग बनता है। हिन्द महासागर के करीब 49 तटवर्ती देशों का विस्तार लगभग 22 करोड़ वर्ग किमी. है। जो संसार के थलमंडल का 16 प्रतिशत तथा विश्व की 31 प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। खनिज पदार्थों की दृष्टि से विश्व का 75 प्रतिशत सोना, 27 प्रतिशत प्लेटिनम, 21 प्रतिशत क्रोमियम, 16 प्रतिशत यूरेनियम, 60 प्रतिशत थोरियम, 13 प्रतिशत तांबा, 9 प्रतिशत मैग्नीशियम, 50 प्रतिशत खिनज तेल आदि इसी क्षेत्र में विद्यमान हैं। विश्व के महत्वपूर्ण मार्ग हिन्द महासागर से ही गुजरते हैं, परन्तु विश्व व्यापार में तटवर्ती देशों का हिस्सा मात्र 10.7 प्रतिशत है तथा इनका सकल घरेलू उत्पाद 6.3 प्रतिशत है।

हिन्द महासागर की भौगोलिक स्थिति सामरिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहां से दक्षिणी गोर्लाद्ध के लगभग सभी देशों की सैनिक गतिविधियें पर नजर एवं नियंत्रण रखा जा सकता है। अंतरमहाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्रों के द्वारा हिन्द महासागर क्षेत्र के विभिन्न द्वीपों से रूस के पूर्वी एवं दक्षिणी भाग, अफ्रीका, दक्षिण एशिया, मध्य एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया को आसानी से लक्ष्य बनाया जा सकता है। अत्यंत महत्वपूर्ण भौगोलिक अविस्थति के कारण ही हिन्द महासागर क्षेत्र से समस्त तटवर्ती देशों के विश्व व्यापार को प्रभावित किया जा सकता है।

भारत समेत दक्षिण एशिया के सभी राष्ट्रों की सुरक्षा हिन्द महासागर पर निर्भर करती है। दुर्भाग्य से हिन्द महासागर को शांत क्षेत्र घोषित करने के सभी प्रयास विफल रहे और हिन्द महासागर महाशक्तियों के सैनिक स्पर्धा का केन्द्र बन गया। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस जैसी शक्तियां अपने हितों के लिए इस क्षेत्र में नौसैनिक अड्डा स्थापित कर रही है तो रूस भी इन कार्यवाहियों से चिंतित होकर अपने हितों की सुरक्षा के लिए सैनिक प्रतिस्पर्धा कर रहा है। अब चीन भी हिन्द महासागर पर आंख गड़ा रहा है और अपना युद्धपोत तैनात कर रहा है। कुल मलाकर सैनिक स्पर्धा के कारण दक्षिण एशिया की स्त्रातजिक स्थिति बहुत नाजुक है।

भारत की जीवन रेखा हिन्द महासागर के संबंध में प्रसिद्ध इतिहासकार एवं कूटनीतिज्ञ के.एम. पणिक्कर का स्पष्ट करना है कि भारत की सुरक्षा हिन्द महासागर पर ही निर्भर करती है। एक सुदृढ़ एवं प्रभावशाली सामुद्रिक नीति के बिना भारत की स्थिति विश्व में कमजोर तथा उसकी सुरक्षा उस देश की दया पर निर्भर करेगी जो हिन्द महासागर पर अधिकार करने में समर्थ होगा। इसलिए भारत को अपनी सामुद्रिक शक्ति को प्रबल बनाने तथा बाह्य आक्रमणों से समुद्र की सुरक्षा करने के लिए एक सुदृण

**वरिष्ठ प्रवक्ता (रक्षा अध्ययन विभाग), पी.जी. कालेज गाजीपुर (उत्तरप्रदेश)*
***शोधछात्र (रक्षा अध्ययन विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तरप्रदेश)*

सामुद्रिक नीति की अत्यंत आवश्यकता है। यदि ऐसा करने के लिए भारत सरकार द्वारा उचित कदम नहीं उटाया जाता है तो भविष्य में कोई विदेशी आक्रांता सीमा का उल्लंघन कर सकता है, जिसमें भारतीय सुरक्षा कभी भी खतरे में पड़ सकती है।

वर्तमान समय में हिन्द महासागर विश्व का ऐसा क्षेत्र है जो अस्थिर और अशांत है। राजनीतिक हलचल और महाशक्तियों की प्रतिद्वन्दिता इस क्षेत्र की मूल विशेषताएं हैं। जब से नौ सैनिक शक्ति के महत्व को समझा जाने लगा है विशेषकर द्वितीय महायुद्व के बाद, तब से यह क्षेत्र संघर्ष तनाव व टकराव का केन्द्र बन गया है। हिन्द महासागर क्षेत्र में अपना सैनिक वर्चस्व स्थापित करने के लिए विश्व की महाशक्तियां विशेषकर अमेरिका, रूस, फ्रांस, ब्रिटेन व चीन में होड़ मची है, जिसका प्रमुख कारण अमेरिकी नौसेना के विशेषज्ञ एडमीरल ए.टी. महान की 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में हिन्द महासागर के संबंध में की गई यह भविष्यवाणी है जिसमें उन्होंने कहा है कि हिन्द महासागर सात समुद्रों की कुंजी है, जो भी देश हिन्द महासागर पर नियंत्रण स्थापित करेगा वह एशिया पर वर्चस्व स्थापित करेगा। 21वीं शताब्दी में विश्व के भाग्य का निर्धारण इसकी समुद्री सतहों पर होगा। साथ ही प्रिसद्ध दार्शनिक डेविड स्मिथ की परिकल्पना जो राष्ट्र हिन्द महासागर पर नियंत्रण स्थापित करेगा वह फारस की खाड़ी पर शासन करने में समर्थ होगा और जो फारस की खाड़ी पर शासन करने में समर्थ होगा, वहीं विश्व के भाग्य का निर्णायक होगा। आज हिन्द महासागर में महाशक्तियों के गतिविधियों को देखते हुए ए.टी. महान तथा डेविड स्मिथ की भविष्यवाणी आंशिक रूप से ही नहीं, बल्कि सत्यता की कसौटी पर पूर्णतः खरी नजर आ रही है।

सामाजिक दृष्टिकोण से विश्व के मानचित्र में भारत व हिन्द महासागर की अवस्थिति बड़े महत्व की है, क्योंकि भारत दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा राष्ट्र है, जिसे हिन्द महासागर तीन ओर से प्रभावित करता है। प्रायद्वीपीय भारत का इतिहास प्राचीनकाल में ही हिन्द महासागर से प्रभावित होता रहा है। तीन ओर से घिरे होने के कारण भारत अपने सामुद्रिक व्यापार हेतु इसी महासागर पर अवलम्बित है। वास्तव में क्राइस्टोफर कोलम्बस के अटलांटिक महासागर पर करने के कई शताब्दियों पहले ही हिन्द महासागर के पूर्व में चीन और पश्चिम में भूमध्यसागरीय देशों को जोड़कर वाणिज्य व सांस्कृतिक आदान-प्रदान करने की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता रहा है। पांचवें से छठी शताब्दी तक बंगाल की खाड़ी में मौर्य और आंध्र राजवंशों ने अपना सामुद्रिक एकाधिकार स्थापित कर मलाया, सुमात्रा तथा जावा आदि क्षेत्रों के अतिरिक्त प्रशांत महासागर के कुछ क्षेत्रों में अपने उपनिवेश स्थापित कर संपूर्ण हिन्द क्षेत्र में अपना प्रभुत्व बनाए रखा। यद्यपि पांचवीं शताब्दी से लेकर दसवीं शताब्दी तक मलक्का जलडमरूमध्य पर राजवंश का एकाधिकार बना रहा। किन्तु 11वीं शताब्दी में चोलवंश द्वारा की गई एक सफल नौसैनिक कार्यवाही के परिणामस्वरूप राजवंश का शासन समाप्त कर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया गया था किन्तु बाद में हिन्द साम्राज्य कमजोर हो जाने के कारण 13वीं शताब्दी में इस सम्पूर्ण सामुद्रिक क्षेत्रों पर अधिकार व नियंत्रण हेतु चली प्रितयोगिता में अन्ततः 1803 ई. में ट्रेफाल्गर की निर्णयात्मक लड़ाई में ब्रिटेन ने फ्रांसीसियों को पराजित कर सम्पूर्ण हिन्द महासागर पर नियंत्रण कर इसे ब्रिटिश झील के रूप में परिवर्तित कर दिया। किन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात ब्रिटेन द्वारा मलाया को छोड़कर संपूर्ण एशिया से अपनी शक्ति समेट लेने के परिणामस्वरूप जो रिक्तता उत्पन्न हुईउसकी पूर्ति भारत, श्रीलंका व पाकिस्तान जैने नवोदित राष्ट्रों द्वारा न कर पाने के कारण यहां अमेरका व रूस, ब्रिटेन, फ्रांस जैसी महाशक्तियों के प्रवेश करने का जो अवसर प्राप्त हुआ, उससे संपूर्ण क्षेत्र की शांति सुरक्षा व स्थिरता के लिए गंभीर संकट पैदा है गया।

बीसवीं शताब्दी के साठ के दशक में हिन्द महासागर में सैन्य गतिविधयां उस समय बढ़ गईं जब, अमेरिका ने डियोगार्सिया में ब्रिटेन के सहयोग से अपना नौसैनिक अड्डा स्थापित कर लिया। बीसवीं शताब्दी के अस्सी के दशक से सोवियत संघ, फ्रांस, ब्रिटेन तथा चीन ने अपने युद्ध पोतों के द्वारा हिन्द महासागर क्षत्र में तीव्र गति में अपनी उपस्थिति दर्ज करा कर सैन्य गतिविधियां प्रारंभ कर दी। फलतः हिन्द महासागर शक्ति संघर्ष का अखाड़ा बन गया है। हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र बनाने की मांग जितनी जोर से की जाती रही है उससे कहीं अधिक तीव्र गति से बड़ी शक्तियों द्वारा नौसैनिक अड्डे कायम करने की जीतोड़ कोशिश की जा रही है।

हिन्द महासागर में बढ़ रहे अमेरिकी सैन्य विस्तार एवं दक्षिणी एशियाई देशों में व्याप्त राजनैतिक व सामरिक अस्थिरता के परिणामस्वरूप हिन्द महासागरीय सुरक्षा की जिम्मेदारी भारत पर और भी बढ़ गई है, क्योंकि दक्षिण एशिया के अन्य देश न तो इन महासागर की रक्षा करने की क्षमता ही रखते हैं और नही दृढ़ राजनीतिक संकल्प। वास्तव में समुद्र से सैकड़ों मील दूर स्थित नेपाल, भूटान व अफगानस्तान आदि के लिए हिन्द महासागर से तभी खतरा उत्पन्न होगा, जब भारत उन खतरों के नीचे दब चुका होगा। उधर, बांग्लादेश अफने सैनिक छोटेपन से छुटकारा पाने की हीन भावना से मुक्त नहीं हो पा रहा है। अतः उससे हिन्द महासागर की सुरक्षा की कल्पना करनी ही ज्यादती होगी ीलंका चारों ओर समुद्र से घिरा अवश्य है किन्तु वह समुद्र तो क्या अपने तटों की ही सुरऐ नहीं कर पा रहा है। इस क्षेत्र में केवल पाकिस्तान ही बचता है किन्तु उसे हिन्द महासागर की चिन्ता भला क्यों होगी। जिन विदेशियों को इस महासागर में प्रभावी न होने देने के लिए भारत इतने प्रयास कर रहा है उन्हीं विदेशियों के लिए पाकिस्तान की भूमि सैनिक अड्डों और अंतरराष्ट्रीय षडयंत्रों के लिए सदैव उपलब्ध है। इतना ही नहीं जो पाकिस्तान अफगानिस्तान के मुजाहिदीनों की सहायता के बहाने भारत के पश्चम में अमेरिकी हथियारों के गोदाम बनवा रहा हो तथा जिसने कराची के पास अमेरिकी नौसेना के आराम और मनोरंजन के नाम पर उसे बड़ा भूभाग सौंप रखा हो उसे भला हिन्द महासागर की सुरक्षा की चिन्ता क्यों सताएगी। वह तो भारत को खतरा पैदा करने करने वालों की सहायता करके हिन्द महासागर को मुस्लिम महासागर के रूप में परिवर्तित करने के लिए प्रयत्नशील है। मालद्वीव की स्थिति तो इतनी दयनीय है कि उससे हिन्द महासागर की सुरक्षा करने की कलप्ना करना ही व्यर्थ है। भारत ही एकमात्र ऐसा क्षेत्रीय देश है जिसका हिन्द महासागरीय चिन्ता उसके राष्ट्रीय हितों के लिए महत्वपूर्ण है।

वर्तमान समय में हम इस वास्विकता से मुंह नहीं मोड़ सकते कि भारतीय प्रवेश द्वार अब सामुद्रिक हो गए हैं और भारत का भविष्य निःसंदेह रूप से समुद्र पर निर्भर होगा।

हिन्द महासागर पर किसी विदेशी शक्ति के नियंत्रण का गहरा प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था पर निश्चित रूप से पड़ेगा। अतः भारत अपने को जीवित रखने के लिए तथा अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए तथा अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए हिन्द महासागर पर अपना नियंत्रण अवश्य कायम रखना चाहेगा। भारत अपने तटवर्ती क्षेत्र जो लगभग 3535 मील है की उचित रक्षा हेतु इस हिन्द महासागर को अनदेखा नहीं कर सकता। यह सही है कि भरात पर अधिकांश हमले स्थली क्षेत्रों से ही हुए हैं। परन्तु

हिन्द महासागर में विद्यमान बड़ी शक्तियों के सैनिक अड्डों एवं युद्धपोतों में स्थित सशक्त सेनाओं से भारत के मर्मस्थलों पर आक्रमण करवा कर इन पर अधिकार करने की चेष्टा की जा सकती है। भारत को अपने द्वीपों की रक्षा के साथ साथ सामुद्रिक कानून के तहत अपनी 200 नाटीकल मील तक के क्षेत्र की भी रक्षा करनी चाहिए। भारत को हिन्द महासागर में स्थित अपने समुद्री मार्गों एवं व्यापार की रक्षा हेतु अन्य तटवर्ती देशों के साथ न केवल राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को स्थापित कर लेना चाहिए, अपितु इसमें यथासंभव सुधार भी करना चाहिए। यही नहीं आवश्यकता पड़ने पर भारत को संयुक्त सैनिक अभ्यास करने पड़ सकते हैं। तभी वह स्थानीय नियंत्रण बनाए रख सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि हिन्द महासागर निःसंदेह भारत के लिए प्रकृति की ओर से प्रदत्त एक बहुमूल्य उपहार तथा एक अनमोल खजाना है। इस पर प्रत्यक्ष एवं परोक्षतः हमारे देश की जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग आश्रित है। देश की अर्थव्यवस्था पर इसका स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। खाद्य पदार्थों की असीमित ऊर्जा स्रोत तथा खनिज संसाधनों की दृष्टि से हिन्द महासागर का महत्व हमारे लिए दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार भारत को निश्चित रूप से स्वयं या अन्य देशों के सहयोग से हिन्द महासागर पर नियंत्रण स्थापित कर लेना चाहिए। क्योंकि ऐसा करना उसकी सुरक्षा के लिए भी अतिआवश्यक है। भारत का इतिहास हमें बताता है कि उसकी स्वतंत्रता इस महासागर पर बाह्य या स्थानीय शक्तियों के अधिकार से ही सम्बद्ध है।

वास्तव में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा आर्थिक विकास, समृद्धि, व्यापार वैज्ञानिक, औद्योगिक व तकनीकी प्रगति, क्षेत्रीय अखण्डता और राजनैतिक स्वतंत्रता की सुरक्षा व रक्षा पूर्णतः भारत की जीवन रेखा हिन्द महासागर पर निर्भर करती है।

संदर्भ :

(1) श्रीवास्तव, जे.एम. : राष्ट्रीय सुरक्षा।

(2) फड़िया, डॉ.बी.एल. : अंतरराष्ट्रीय राजनीति।

(3) पांडेय, बाबूराम एवं पांडेय, रामसूरत : राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध।

(4) सिंह, अशोक कुमार : राष्ट्रीय सुरक्षा के आयाम।

(5) सिंह, डॉ.डी.एन. : राष्ट्रीय सुरक्षा।

(6) शर्मा, डॉ. हरवीर : राष्ट्रीय सुरक्षा।

(7) सिंह, डॉ. लल्लन जी : राष्ट्रीय सुरक्षा और प्रतिरक्षा।

(8) सिंह, अशोक कुमार : इंडियन ओशन - टेन्सन आर रिलेक्सेशन।

(9) रूम्यांत्सेव, येण्गेनी : हिन्द महासागर - शांति और सुरक्षा की समस्या।

(10) वर्मा, डॉ.रामविलास : भारत का भौगोलिक विवेचन।

(11) पणिक्कर, के.एम. : प्रॉब्लम्स आफ इंडिया डिफेन्स।

❁❁

शोध-पत्र प्रकाशन सम्बंधी सूचना

'रिसर्च लिंक' (राष्ट्रीय मासिक शोध जर्नल) में शोधपत्रों के प्रकाशन हेत किसी भी प्रकार का प्रकाशन शुल्क नहीं लिया जाता है। शोधपत्र प्रकाशन हेतु आप शोधपत्र की सॉफ्टकॉपी हमारे ई-मेल आईडी - researchlink@yahoo.co.in पर भेज सकते हैं। शोधपत्र प्राप्त होते ही रेफरी प्रकाशन हेतु स्वीकृत, अस्वीकृत अथवा संशोधन हेतु परामर्श प्रदान करता है। शोधपत्र प्रकाशन योग्य होने पर ही केवल शोधछात्रों, प्राध्यापकों से सदस्यता शुल्क लिया जाता है। सदस्यता शुल्क का भुगतान ऑन-लाईन हमारे खाते में सीधे किया जा सकता है। बैंक सम्बंधी जानकारी निम्नानुसार है -

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया

ब्रांच : ओल्ड पलासिया, इन्दौर,

कोड - **SBIN 000 3432**

खाते का नाम : रिसर्च लिंक,

खाता नंबर - **63025612815**

भुगतान की मूल रसीद, शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालयीन पते पर भेजना अनिवार्य है।